Toppersnotes

Unleash the topper in you

भूगोल

सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए

भारत का भूगोल - II

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	प्रमुख कृषि विधियाँ	1
2	भारत में कृषि वानिकी	15
3	हरित क्रांति (Green Revolution)	18
4	प्राकृतिक वनस्पति	22
5	भारत की मृदा	45
6	भारत की जनसंख्या	66
7	भारत की झीलें	78
8	भारत की बहुउद्देशीय परियोजना	88
9	प्राकृतिक संसाधन	101
10	ऊर्जा संसाधन (Energy Resources)	134
11	पेट्रोलियम	152
12	उद्योग	166
13	लौह इस्पात उद्योग	183
14	भारत के औद्योगिक प्रदेश	201
15	भारत के आर्थिक प्रदेश	206
16	पर्यावरणीय आपदा	216
17	भारत के संदर्भ में प्रादेशिक नियोजन	240

1 अध्याय प्रमुख कृषि विधियाँ

प्रमुख कृषि विधियाँ

[1] [जीविकोपार्जी कृषि Subsistence farming]

न्यूनतम कृषि भूमि में अधिकतम उपज पैदा की जाती है। व उपज फसल का परिवार द्वारा ही उपयोग कर लिया जाता है

- इसे गहन कृषि, जीवन निर्वाह कृषि के नाम से भी जाना जाता है, यह कृषि मानसून पर आधारित है।
- विश्व की आधी जनसंख्या इस कृषि पर निर्भर है।

[2] स्थानान्तरी कृषि [Shifting Cultivation] :-

- कृषि की सबसे प्राचीन पद्धति है।
- जंगलों को काटकर जलाकर भूमि को उपजाऊ बनाकर कृषि की जाती है।
- इसे कर्तन एवं दहन प्रणाली या पेड़ा पद्धति कहा जाता है।
- यह कृषि भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में अधिक की जाती है। इसके अलावा M.P, राजस्थान, छत्तीसगढ़ के कुछ भागों में की जाती है।

क्र.स.	राज्य	कृषि का नाम	क्र.स		
1.	उत्तर पूर्वी राज्य	झूम / झूमिंग	10.	मणिपुर	पामलू
2.	M.P, छत्तीसगढ़	दैप्पा, डहिया, बेवर	11.	छत्तीसगढ़ का बस्तर जिला अण्डमान निकोबार	दीपा
3.	ओड़िसा	पामाडवी / कोमान / बिंगा			
4.	राजस्थान	वाया / वालरे / वाल्टरे			
5.	आन्ध्र प्रदेश	पोडू / पेड़ा			
6.	मेघालय	बोगामा			
7.	पश्चिमी घाट	कुमारी			
8.	झारखण्ड	कुरूवा			
9.	हिमालय क्षेत्र	खिल			

विस्तृत कृषि (Extensive Cultivation) :-

इस प्रकार की कृषि बड़े क्षेत्रों में की जाती है कृषि आधुनिक यंत्रों से की जाती है। मानव श्रम का उपयोग होता है। प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है विकसित देशों में की जाती है
- भारत में पंजाब, हरियाणा में विस्तृत कृषि की जाती है।

वाणिज्य कृषि (Commercial Farming) :-

- वाणिज्य कृषि निवेश लाभ को ध्यान में रखकर किया जाता।
- अधिक पैदावार करने के लिए रासायनिक, उर्वरकों, कीटनाशकों, हाइब्रिड बीजों का बहुतायात में प्रयोग किया जाता है।
- इन फसलों को बाजार में बेचा जाता है। इसका जीवन निर्वाह हेतु उपयोग नहीं किया जाता है।
- पंजाब-हरियाणा में ऐसी कृषि की जाती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

बागानी / बगाती / रोपण कृषि

- इस प्रकार की कृषि बागानों तथा कृषि फार्मो पर की जाती है।
- एकल फसलों के बाग लगाये जाते है
  जैसे :- केला, चाय, कॉफी, रबर, नारियल, किन्नू
- वाणिज्य कृषि का ही रूप है।

जैविक कृषि Organic farming :-

- रासायनिक खादों का प्रयोग ना कर जैविक खादों (शैवाल फगंस) का प्रयोग किया जाता है।
- गोबर खाद कंपोस्ट, वर्मी कंपोस्ट, हरी खाद, मिश्रित फसल, जैविक कृषि के अन्य तत्व है।
- पर्यावरण मित्र कृषि है।
- 10वीं पंचवर्षीय योजना के तहत रायपुर में जैविक खेती परियोजना (oct 2004) शुरू की गई।
- अल्बर्ट हावर्ड - आधुनिक जैविक कृषि का जनक।
- क्यूबा - जैविक कृषि को अपनाने वाले विश्व का पहला देश।

जल कृषि Aquaculture :-

- जलीय जीवो के पालन को, जल कृषि कहा जाता है, मत्स्यन से भिन्न होती है।
- शैवाल कृषि, झींगा कृषि, मोतियो की खेती, शंख कृषि

एक्वापोनिक कृषि :-

फसल व मछली पालन साथ - साथ, एक ही टैंक में मछली और पौधे एक साथ ही वृद्धि करते हैं।

समुद्री शैवाल कृषि :-

समुद्री शैवाल में ऐगार - ऐगार नामक पॉलिसैकेराइड मिलता है। अन्य कई पॉलीसैकेराइड विभिन्न शैवाल में मिलते हैं।

समुद्री शैवाल एक निकालने वाली फसल है जिसमें उर्वरकों या पानी की बहुत कम आवश्यकता होती है।

सहकारी कृषि :-

- इस कृषि में किसान आपस में मिलकर एक व्यवसायिक संगठन बनाते हैं।
- फिर कृषि कार्य (अपनी भूमि पर) करते हैं।

शुष्क कृषि Dry Farming :-

- जहाँ 75 CM से कम वर्षा होती है।
- सिंचाई की सुविधाऐं उपलब्ध नही है।
- भारत में खेती के कुल क्षेत्रफल का लगभग 60% भाग शुष्क एवं वर्षा युक्त है।

विशेषताऐं :-

- शुष्क कृषि के लिए आर्द्रता संरक्षण आवश्यक है - इसके लिए खेतों को वर्षा के मौसम में बार - बार जोता जाता है।
- भूमि को परती छोड़ा जाता है जिससे मृदा उर्वरता को पुन: संचित किया जाता है।

• संविदा कृषि Contract Farming

→ समझौता कृषि भी कहा जाता है।

→ समझौता के तहत किसी Company के लिए, उत्पादक कार्य करता है।

• ट्रक फार्मिंग :-

↳ नवीन कृषि तकनीक।

↳ वातानुकूलित ट्रकों का प्रयोग किया जाता।

↳ अमेरिका में प्रचलित।

• मिश्रित कृषि Mixed Farming :-

↳ फसल व पशुपालन साथ-साथ किया जाता है।

सेरी कल्चर	— रेशम कीट पालन
एपीकल्चर	— मधु मक्खी पालन
विटीकल्चर	— अंगूर उत्पादन
फ्लोरीकल्चर	— फूलों का उत्पादन
वर्मीकल्चर	— केंचुआँ पालन
पोमीकल्चर	— फलों का उत्पादन
ओलरीकल्चर	— सब्जियों का उत्पादन
पिसीकल्चर	→ मछली पालन
होर्टीकल्चर	— बागवानी कृषि
एरोपोनिक्स	— हवा में पौधों को उगाना
हाइड्रोपोनिक्स	— जल में पौधों को उगाना (मृदा रहित कृषि)

कृषि (भू) जोत एवं उसके आकार

भूमि के एक विशिष्ट आकार या स्थान को भू-जोत या कृषि जोत कहा जाता है।

सीमांत जोत :-

1 हेक्टेयर से कम भूमि वाली जोत को कहा जाता है।
भारत में सीमांत किसानो की संख्या सर्वाधिक है।

छोटी जोत :-

1 से 2 हेक्टेयर भूमि वाली जोत को छोटी जोत कहा जाता है।

अर्द्ध मध्यम जोत :-

2 से 4 हेक्टेयर

मध्यम जोत :-

4 से 10 हेक्टेयर

बड़ी जोत :-

10 हेक्टेयर से अधिक

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत में कुल 15 एग्रो क्लाइमेटिक जोन में बांटा गया है।
20 इकोलॉजिकल क्षेत्र

प्रथम कृषि विश्वविद्यालय – पंतनगर (उत्तराखण्ड) - 1960 में

सदाबहार क्रांति – जैविक खेती को प्रोत्साहन और किसानो को फसल का उचित मूल्य दिलाने और उत्पादन बढ़ाने हेतु।

हरित क्रान्ति – खाद्यान उत्पादन
श्वेत क्रान्ति – दुग्ध उत्पादन
नीली क्रान्ति – मत्स्य उत्पादन
भूरी क्रान्ति – कोको उत्पादन
रजत क्रान्ति – अंडा / कुक्कुट उत्पादन
पीली क्रान्ति – तिलहन उत्पादन
लाल क्रांति – टमाटर / मांस उत्पादन
गुलाबी क्रांति – झींगा मछली / c
बादामी क्रांति – मसाला उत्पादन
सुनहरी क्रांति – फल / शहद उत्पादन
गोल क्रान्ति – आलू उत्पादन
रजत रेशा क्रांति – कपास उत्पादन
सुनहरा रेशा क्रांति – जूट उत्पादन
सैफ्रान क्रांति – केसर क्रांति
हरित सोना क्रांति – उर्वरक उत्पादन बांस उत्पादन
मूक क्रांति – बीज उत्पादन मोटा अनाज उत्पादन
परामनी क्रांति – भिंडी उत्पादन
इन्द्र धनुषीय क्रांति – सभी क्षेत्रों में उत्पादन में वृद्धि करने हेतु
ग्रे / स्लेटी क्रांति – उर्वरक उत्पादन

कृषि उत्पादकता

- कृषि उत्पादकता से तात्पर्य प्रति हेक्टेयर उत्पादन या प्रति श्रमिक उत्पादन से है।
- विस्तृत कृषि वाले क्षेत्रों में श्रम उत्पादकता अधिक जबकि गहन कृषि वाले क्षेत्रों में श्रम उत्पादकता कम होती है।
- कृषि उत्पादकता में प्राकृतिक व मानवीय दोनों प्रकार के तत्वों का योगदान रहता है।
- हरित क्रांन्ति वाले प्रदेशों की उत्पादकता सबसे अधिक है।

कृषि दक्षता Agriculture Efficiency

कृषि दक्षता भी कृषि उत्पादकता के समान है लेकिन अंतर यह है कि कृषि उत्पादकता जहाँ किसी क्षेत्र की कृषि सम्भाव्यता को दर्शाती है वहीं कृषि दक्षता, कृषि के वर्तमान स्तर का प्रतीक है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

फसल प्रतिरूप (Cropping patterns) :-

किसी कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत कितना - कितना क्षेत्रफल है।

शस्य गहनता Cropping Intiensity)

- एक ही खेत में एक कृषि वर्ष में उगाई गई फसलों की बारम्बारता को शस्य गहनता कहते है।
- किसी भूमि पर एक वर्ष में उगाई गयी फसलों की संख्या ही उस भूमि की शस्य गहनता कहलाती है।
- शस्य गहनता का मान जितना अधिक होगा भूमि उपयोग की क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी।
- भारत में पंजाब की सबसे अधिक शस्य गहनता है।

पंजाब
↓
हरियाणा
↓
प. बंगाल

- शस्य गहनता $= \frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{शुद्ध बोया गया क्षेत्र}} \times 100$

Toppersnotes Unleash the topper in you

भारत में कृषि वर्गीकरण

[1] M. S रंधावा :-

5 भागों में विभाजन
- हिमालय के शीतोष्ण क्षेत्र
- उत्तरी शुष्क (गेहूँ) प्रदेश
- पूर्वी (आर्द्र) चावल प्रदेश
- पश्चिमी आर्द्र (मालावा) क्षेत्र
- दक्षिण, अपरिष्कृत अन्न क्षेत्र

आधार:→ भू-जलवायु विविधता
फसलों की विशेषता
पशुधन

(2) पी सेनगुप्ता / जी. सदासुक - 1968

तीन भागों में -
- जलवायु विशेषताऐं - 4 वृहद् प्रदेश
- भू - आकृतिक विशेषताऐं - 11 मध्य प्रदेश
- फसल संयोजन - 60 सूक्ष्म प्रदेश

(3) भारत के कृषि जलवायु प्रदेश -

योजना आयोग व राष्ट्रीय दूरस्थ संवेदन एजेन्सी ने 15 कृषि जलवायु प्रदेशों में बाँटा।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

श्वेत क्रान्ति – जनक वर्गीज कुरियन

→ दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए

शुरुआत – 1970

L इसी समय National Dairy Development Board – NDDB की स्थापना।

→ सहकारी समितियों के माध्यम से डेरी विकास कार्यक्रम सबसे पहले गुजरात में शुरू किया गया।

– गुजरात के आणन्द जिले में सबसे अधिक सफल रही

– दुग्ध उत्पादन वृद्धि को Operation Flood भी कहा गया

श्वेत क्रान्ति के चरण – तीन चरण

I – शुरुआत 10 राज्यों में की गई। जिसमें सभी चारों बड़े महानगर – मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, चैन्नई में मदर डेयरी की स्थापना

II मवेशियों की बीमारी रोकने के लिए टीका रक्षा का विकास किया। कार्यक्रम का विस्तार कर्नाटक, राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में डेयरी डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाना था।

III 73000 सहकारी समीतियाँ

Unleash the topper in you

उपलब्धियाँ Achievements :-

- भैंसियों के प्रजनन में सुधार तथा नई प्रौद्योगिकी को अपनाया जाने पर आधारित है।
- वर्तमान में दुग्ध उत्पादन में भारत का पहला स्थान
- ग्रामीण जनता पर सकारात्मक प्रभाव व्यवसाय मिला
- प्रति व्यक्ति दुग्ध की उपलब्धता 375 ग्राम
- ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आणन्द मेहसाणा, पालनकर में अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना 10 बड़े नगरों में मैट्रो डेयरी
- पशुधन बीमा योजना का अनुमोदन Feb 2006 में किया गया 2006 - 07 में प्रयोगिक रूप मे चयनित 100 जिलों मे शुरू किया।

  योजना - असमय पशु की मृत्यु होने पर मुआवजा
- भारत में सर्वाधिक पशुधन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नीली क्रांति :-

- शुरुआत - 1970
- मछली उत्पादन में बढोतरी हेतु।
- 5 वी पंचवर्षीय योजना के तहत
- भारत मछली उत्पादन में विश्व का दूसरा बड़ा देश है जल कृषि में भी भारत का दूसरा स्थान है।
- नीली क्रांति से झींगे के उत्पादन में अच्छी वृद्धि हुई।

आन्ध्र प्रदेश (नल्लोर) को झींगा राजधानी

जल कृषि

→ जलीय जीवों के संवर्धन को जलकृषि कहा जाता है।

(1) शैवाल कृषि
(2) मत्स्यपालन
(3) झींगा पालन
(4) मोतियो की कृषि

सुनहरी क्रान्ति

→ मधुमक्खी पालन

रेशम कीट पालन :-

→ चीन व जापान रेशम के प्रमुख उत्पादक देश।
→ भारत में कर्नाटक - आन्ध्रप्रदेश - पश्चिम बंगाल

रजत क्रान्ति :-

→ मुर्गी पालन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारतीय कृषि को तीन वर्गों में रखा जा सकता है -

खरीफ	रबी	जायद
बोने का समय → जून - जुलाई	अक्टूबर-नवम्बर	मार्च
काटने का समय → सितम्बर- अक्टूबर	अप्रैल - मई	जून में कटाई
खरीफ की फसल भारतीय मानसून पर निर्भर है	मावठ (पश्चिमी विक्षोभ) लाभदायक सिंचाई पर आधारित	ये मुख्यत: ग्रीष्मकाल की होती है।
अधिक तापमान व अधिक आर्द्रता की आवश्यकता	कम तापमान बोते समय अधिक तापमान पकते समय	
धान - सोयाबीन, अरहर तिल, मूँग, उड़द, लोबिया ज्वार, रागी, बाजरा मूँगफली, तम्बाकु, कपास	धान:- जौ, मटर, चना, सरसों आलू, मसूर अलसी, राई	खीरा, ककड़ी, तरबूज खरबूजा, करेला

Toppers notes Unleash the topper in you

2 अध्याय भारत में कृषि वानिकी

भारत में कृषि वानिकी
(Agroforestry in India)

→ कृषि वानिकी से अर्थ फसलों की कृषि के साथ वानिकी अर्थात् वृक्षों का पालन करने से है।

→ फसल उत्पादन प्रक्रिया के साथ खेतों की मेड़ पर या फसलों के बीच कुछ दूरी पर कतारबद्ध वृक्षारोपण किया जा सकता है।

→ इसके विविध रूप हो सकते हैं जैसे :-

(1) फार्म वानिकी :- फसलों के साथ वृक्षारोपण

(2) चारागाह वानिकी :- पशुचारण वाले क्षेत्रों में चारागाहों में वृक्षारोपण

(3) मिश्रित कृषि वानिकी :- फसल उत्पादन व पशुपालन के साथ वृक्षारोपण

(4) बागवानी कृषि वानिकी :- बागवानी फसलों जैसे : सब्जी आदि के साथ वृक्षारोपण।

(5) मत्स्य कृषि वानिकी :- मछली पालन हेतु बनाये गये तालाबों के किनारे वृक्षारोपण।

(6) प्रक्षेप वानिकी :-

↳ डेयरी, मधुमक्खी पालन, रेशम कीट पालन आदि के साथ वृक्षों का उत्पादन

↳ वैश्विक स्तर पर कृषि वानिकी की शुरुआत म्यांमार से है। जहाँ टोंग्या नामक स्थानान्तरित कृषि के रूप वृक्षारोपण की शुरुआत हुई।

↳ इस कृषि प्रारूप में वृक्षों को लगाकर वहाँ कुछ समय तक फसलों की कृषि की जाती थी एवं वृक्ष बड़े हो जाते थे तो दूसरे क्षेत्र में वृक्ष लगाकर फसल उत्पादन शुरू कर दिया जाता था अर्थात् इसका उद्देश्य फसलों की कृषि के बहाने वृक्षों का विकास करना था।

↳ वैश्विक स्तर पर कृषि वानिकी का उद्देश्य अधिक से अधिक क्षेत्र पर वृक्षों का विकास कर पर्यावरण संरक्षण करना है।

↳ वैश्विक स्तर पर नैरोबी (केन्या) में 1978 में International Center For Research in Agroforestry (ICRAF) स्थापित किया गया है।

↳ भारत में 1988 में झाँसी (UP) में National Research Center for Agroforestry की स्थापना की गई थी। जिसे 2014 के बाद Central Agroforestry Research Institute (CAFRI) के नाम से जाना जाता है।

↳ भारत में वनों के विकास हेतु पहली वन नीति आजादी के बाद 1952 में घोषित की गई थी। जिसमें 1988 में संशोधन किया गया इस नीति के तहत समस्त भौगोलिक क्षेत्रफल के एक तिहाई भाग पर वनों का विकास करने का लक्ष्य रखा गया, परन्तु यह अभी तक संभव नहीं हुआ है। अतः कृषि वानिकी के माध्यम से वन क्षेत्र का विकास करने की कोशिश की जा रही है इस हेतु भारत ने 2014 में अलग से कृषि वानिकी नीति घोषित की है तथा भारत दुनिया का पहला देश है जिसने अलग से कृषि वानिकी नीति घोषित की है

भारत में कृषि वानिकी की संभावनाएं एवं इसके लाभ :-

(1) भारत में बड़े पैमाने पर व्यर्थ भूमि के रूप में एवं खेतों की सीमाओं के सहारे खाली जमीन पड़ी है जिस पर वृक्षों का विकास कर संसाधन का पर्याप्त उपभोग हो सकता है।

(2) इस प्रणाली में रोजगार सृजन की अपार क्षमता है।

(3) इसके माध्यम से कुटीर उद्योगों को विभिन्न कच्चा माल जैसे लकड़ी रेशा, गोंद आदि उपलब्ध करवाये जा रहे हैं।

(4) यह प्रणाली पारिस्थितिकीय संतुलन स्थापित करने में सहयोग करती है

(5) इसके माध्यम से मृदा संरक्षण व जल संरक्षण किया जा सकता है

(6) भारत मे फसल कृषि मौसमी आपदाओं से अत्यधिक प्रभावित है जैसे अकाल, बाढ़, सूखा, चक्रवात आदि।

अतः कृषि वानिकी किसानों के लिए आय का दूसरा विकल्प है अथार्त आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है।

→ CAFRI के अनुसार अभी तक भारत का 25 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र कृषि वानिकी के अन्तर्गत है तथा 2050 तक 28 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र इसके अन्तर्गत और लाने की योजना है अतः 2050 तक कुल 53 Million हैक्टेयर क्षेत्र पर कृषि वानिकी के अन्तर्गत आ जायेगा जो कुल क्षेत्रफल का लगभग 17.5% होगा।

↳ कृषि वानिकी के अन्तर्गत भारत में वृहत स्तर पर पोपलर (पहाड़ी पीपल) यूकेलिप्टस, कदम आदि के वृक्ष उगाये जा रहे हैं।

↳ पोपलर भारत की अधिकांश प्लाइवुड, खेल सामग्री, माचिस उद्योग आदि के लिए कच्चे माल का स्त्रोत है।

↳ अतः कृषि वानिकी रोजगार सृजन, औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you